International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

बी.एड.प्रषिक्षणार्थियों की बहुभाषी षिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन

अंजली[1], प्रो. अनिल कुमार नौटियाल[2]

[1]एम. एड. छात्रा, षिक्षा विभाग, बिड़ला परिसर, हेमवती नन्दन बहुगुणा गढ़वाल विष्वविद्यालय (केन्द्रीय विष्वविद्यालय), श्रीनगर गढ़वाल, उत्तराखण्ड
[2]प्रोफेसर, षिक्षा विभाग, बिड़ला परिसर, हेमवती नन्दन बहुगुणा गढ़वाल विष्वविद्यालय (केन्द्रीय विष्वविद्यालय), श्रीनगर गढ़वाल, उत्तराखण्ड

सारांष

षिक्षा एक गतिषील व सामाजिक प्रक्रिया है। प्रत्येक समाज षिक्षा के द्वारा ही ज्ञान का हस्तांतरण एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में करता है। षिक्षा समाज की संस्कृति की निरन्तरता को बनाए रखती है। षिक्षा के द्वारा ही बालक समाज के आधारभूत नियमों, परम्पराओं, प्रतिमानों एवं मूल्यों को सीखता है। इस विचार से षिक्षा एक संस्था के रूप में कार्य करती है। वर्तमान जाँच में लिंग, स्थानीयता और विषय वर्ग के आधार पर बी. एड. प्रषिक्षणार्थियों का बहुभाषी षिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन किया गया है। प्रस्तुत षोध अध्ययन में पौड़ी जिले के हेमवती नन्दन बहुगुणा गढ़वाल विष्वविद्यालय, श्रीनगर गढ़वाल में अध्ययनरत द्विवर्षीय बी. एड. प्रषिक्षणार्थियों को जनसंख्या के रूप में लिया गया है, जिसमें षोधार्थिनी द्वारा 160 द्विवर्षीय बी. एड. प्रषिक्षणार्थियों का चयन यादृच्छिक न्यादर्ष चयन विधि के द्वारा किया गया है। इस षोध अध्ययन में वर्णात्मक षोध के अन्तर्गत सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। बहुभाषी षिक्षा के प्रति बी. एड. प्रषिक्षणार्थियों के अभिवृत्ति के मापन हेतु षोधार्थिनी द्वारा स्वर्निमित उपकरण का निर्माण किया गया। षोध अध्ययन में उद्देष्यों एवं परिकल्पनाओं के आधार पर उपयुक्त वर्णात्मक एवं अनुमानित सांख्यिकी का प्रयोग किया गया, जिसके अर्न्तगत माध्य, मानक विचलन एवं टी–परीक्षण का प्रयोग किया गया। षोध अध्ययन के निष्कर्ष यह बताते हैं कि लिंग, स्थानीयता और विषय वर्ग के आधार पर बी. एड. प्रषिक्षणार्थियों का बहुभाषी षिक्षा के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। महिला बी. एड. प्रषिक्षणार्थियों का पुरुष बी. एड. प्रषिक्षणार्थियों की तुलना में अभिवृत्ति सकारात्मक पाया गया। वहीं, ग्रामीण क्षेत्र में निवास करने वाले बी. एड. प्रषिक्षणार्थियों का षहरी क्षेत्र में निवास करने वाले बी. एड. प्रषिक्षणार्थियों की तुलना में अभिवृत्ति सकारात्मक पाया गया। विज्ञान–वर्ग के बी. एड. प्रषिक्षणार्थियों का कला–वर्ग के बी. एड. प्रषिक्षणार्थियों की तुलना में अभिवृत्ति सकारात्मक पाया गया।

मूल षब्दः प्रषिक्षणार्थियों, बहुभाषी षिक्षा, अभिवृत्ति।

प्रस्तावना

षिक्षा मानव जीवन की पहली आवष्यकता है। षिक्षा वह साधन है जिसके द्वारा बालक की समस्त षारीरिक, मानसिक, आध्यात्मिक षक्तियों का विकास होता है। बालक के अन्दर निहित कुछ जन्मजात षक्तियाँ होती हैं, जिन्हें षिक्षा के माध्यम से बाहर निकालने का प्रयास किया जाता है। ये षक्तियाँ बीज के रूप में अन्तर्निहित होती हैं जिसको विकसित करने के लिए वातावरण रूपी खाद तथा ज्ञान रूपी जल द्वारा सींचा जाता है ताकि वह एक आदर्ष नागरिक बन सके। षिक्षा बालक का सर्वांगीण विकास करती है। वैदिक काल में षिक्षा को 'सा विद्या विमुक्तये' की सूक्ति के आधार पर समझा जाता था। अर्थात विद्या वही है जो मुक्ति प्रदान करे। वास्तव में षिक्षा वह प्रक्रिया है जो जन्मजात षक्तियों का विकास करती है। गाँधी जी के अनुसार 'षिक्षा से अभिप्राय बालक में निहित षारीरिक, मानसिक एवं आत्मिक श्रेष्ठ षक्तियों का सर्वांगीण विकास है।' बहुभाषी षिक्षा से अभिप्राय एक से अधिक भाषाओं को बोलने, समझने, पढ़ने व लिख सकने की क्षमता से है। षिक्षा के संदर्भ में दो या दो से अधिक भाषाओं का समावेष किया जाता है, ताकि छात्र अपनी मातृभाषा के साथ अन्य भाषाओं को भी सीख सकें। इसका मुख्य उद्देष्य छात्रों को अपनी मातृभाषा के साथ दूसरी भाषाओं को भी सीखने का मौका देना होता है, ताकि वे विभिन्न भाषाओं के माध्यम से षिक्षा प्राप्त कर सकें और अधिक भाषाओं की जागरूकता प्राप्त कर सकें। बहुभाषी षिक्षा के द्वारा छात्रों को भाषा के बीच संवैधानिक और गैर–संवैधानिक विवाद को समझने और संवाद करने का मौका मिलता है, जो उनके सामाजिक और व्यक्तिगत विकास को बढ़ावा देता है। राष्ट्रीय षिक्षा नीति, 2020 में भी बहुभाषी षिक्षा का उल्लेख किया गया। विभिन्न भाषा वाली कक्षाएँ संसाधन के रूप में कार्य करती हैं। अनेक भाषाएँ सीखने से हमारे भाषा के उच्चारण में भी सुधार होता है। सम्प्रेषण कौषल, सहयोग और समूह–कार्य जीवन के प्रत्येक चरण में आवष्यक है। इसमें भी बहुभाषी षिक्षा महत्वपूर्ण है। हॉगेन के अनुसार, दो भाषाओं के ज्ञान की स्थिति द्विभाषिक है। वैसे तो बहुत सी भाषाओं को जानने वाले को बहुभाषिक कहते हैं, परन्तु एक से अधिक भाषा (केवल दो) जानने वाले को द्विभाषिक के साथ–साथ बहुभाषिक भी कहते हैं।

बिन ताहिर, एस. जेड. (2015) के अध्ययन संत्रियों/छात्रों और उस्तादों/शिक्षकों के बहुभाषी शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति के प्रभाव का आकलन करने के लिए शोध किया गया। प्रस्तुत शोध अध्ययन में सर्वेक्षण प्रारूप का उपयोग करते हुए परिमाणात्मक उपागम अपनाया गया। शोध अध्ययन के लिए कुल 839, जिनमें से 788 संत्री और 51 उस्ताद शामिल थे, को जनसंख्या के रूप में लिया गया, जिनमें से प्रतिदर्श के रूप में 100 लोगों का चयन सरल यादृच्छिक प्रतिदर्श तकनीक के माध्यम से किया गया। प्रदत्तों के संग्रहण के लिए शोधकर्त्ता द्वारा प्रश्नावली का उपयोग किया गया। प्रदत्तों का विश्लेषण वर्णात्मक एवं अनुमानात्मक रूप से एस. पी. एस. एस. संस्करण 17 का उपयोग करके किया गया। शोधकर्त्ता ने यह पाया गया है संत्रियों और उस्तादों के व्यवहार का प्रभाव बहुभाषी शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का प्रभाव था। सेवानी, डॉ. अशोक (2016) के अध्ययन अध्यापक शिक्षा संस्थाओं के बी. एड. कार्यक्रम के भावी शिक्षकों में समावेशित शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति एवं मूल्यों का अध्ययन प्रस्तुत अध्ययन का प्रमुख कार्यक्षेत्र राजस्थान राज्य है । अध्यापक शिक्षा संस्थाओं के बी. एड. कार्यक्रम के 400 भावी शिक्षकों का चयन किया गया जिसमें 200 राजकीय एवं 200 गैर–राजकीय संस्थानों/महाविद्यालयों के भावी शिक्षक हैं जिसमें 100 महिला, 100 पुरुष भावी शिक्षक लिए गए। प्रस्तुत अध्ययन में उद्देश्यों की प्रकृति के अनुसार मध्यमान, प्रमाप विचलन, एफ अनुपात (एनोवा) का प्रयोग किया गया। प्रस्तुत शोध समस्या की प्रकृति वर्णात्मक है। अतः प्रस्तुत अध्ययन में समस्या की प्रकृति को ध्यान में रखते हुए वर्णात्मक शोध की सर्वेक्षण अध्ययन विधि को अपनाया गया। अध्यापक शिक्षा संस्थाओं के बी. एड. कार्यक्रम के भावी शिक्षकों की समावेशित शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं है। सक्सेना, मालती (2017) ने अध्ययन बी. एड. प्रशिक्षणार्थियों की जीवन कौशल शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन इस शोध में जनसंख्या के रूप में जयपुर जिले के चार शिक्षा महाविद्यालयों के 100 बी. एड. प्रशिक्षणार्थियों को लिया गया। शोध में न्यादर्श के अंतर्गत सौउद्देश्य विधि का प्रयोग तथा यादृच्छिक विधि का चयन किया गया । प्रस्तुत शोध अध्ययन के लिए सर्वेक्षण विधि का चयन किया गया। उपकरण के रूप में स्वनिर्मित अभिवृत्ति मापनी का निर्माण किया गया। बी. एड. महिला व पुरुष प्रशिक्षणारर्थी की जीवन कौशल शिक्षा से आर्थिक लाभ के प्रति अभिवृत्ति के प्राप्तांकों के मध्यमानों में सार्थक अंतर नहीं पाया गया। अंकिता (2018) के अध्ययन बी. एड. शिक्षक–प्रशिक्षणार्थियों की शैक्षिक अभिक्षमता का उनकी वैयक्तिक पृष्ठभूमि के संदर्भ में अध्ययन जनसंख्या के रूप में बी. एड. शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों के रूप में अध्ययनरत छात्रों में से 100 शिक्षक–प्रशिक्षणार्थियों का चयन स्तरीकृत यादृच्छिक न्यादर्श विधि से किया गया है। इस अध्ययन हेतु कुमाऊँ विश्वविद्यालय नैनीताल से सम्बद्ध ऊधम सिंह नगर जिले के बी. एड. महाविद्यालयों को आकस्मिक नमूना विधि से लिया गया है। अध्ययन में डाहिया एवं सिंह (2017) द्वारा विकसित टीचिंग एपटीट्यूड टेस्ट मापनी को प्रयोग में लाया गया है। बी. एड. शिक्षक–प्रशिक्षणार्थियों की शैक्षिक अभिक्षमता में वैयक्तिक पृष्ठभूमि के आधार पर कोई सार्थक अंतर नहीं होता है। सुजा डॉ. परा शोभा (2019) ने अपने अध्ययन बी. एड. और डी. एल. एड. विद्यार्थियों का शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन में जनसंख्या के रूप में प्रयागराज के बी. एड. और डी. एल. एड. के कुल 100 शिक्षक प्रशिक्षकों को न्यादर्श के रूप में लिया गया। जिसमें 50 विद्यार्थियों का एक नमूना शांति रमेशचन्द्र वेन्दों करछना से और दूसरा बी. एड. के 50 विद्यार्थियों का नमूना इविंग क्रिश्चयन कॉलेज प्रयागराज से लिया गया। प्रस्तुत शोध में आँकड़ों के संकलन के लिए एस. पी. आहलूवालिया की शिक्षण अभिवृत्ति परिसूची का प्रयोग किया गया। प्रस्तुत शोध में वर्णात्मक विधि के अंतर्गत सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया। बी. एड. महिला और बी. एड. पुरुष छात्रों की शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति में सकारात्मक अंतर है। डी. एल. एड. महिला और डी. एल. एड. पुरुष छात्रों की शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं है। कौर, परमजीत (2019) ने अपने अध्ययन प्राथमिक स्तर पर बहुभाषी कक्षा सेटिंग में भाषा सीखना में जनसंख्या के रूप में व्यक्तियों का कोई समूह लिया गया। शोधकर्त्ता ने भाषा का अध्ययन करने का प्रस्ताव रखा। प्राथमिक स्तर पर बहुभाषी परिवेश में सीखना, नमूना, अवलोकन और विश्लेषण के लिए चुनी गई जनसंख्या का एक छोटा सा हिस्सा लिया गया। शोधकर्त्ता के लिए प्रतिभागी अवलोकन अनुसूची में प्रयुक्त उपकरण माता–पिता के साथ बातचीत के आधार पर, यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि अधिकांश माता–पिता अपने बच्चों के अध्ययन के प्रति जागरूक थे। देवी मेनका (2020) ने अपने अध्ययन बी. एड. एवं बी. एस. टी. सी. प्रशिक्षणार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि और अध्यापन के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन में जनसंख्या के रूप में इनमें सम्मिलित दोनों बी. एड. एवं बी. एस. टी. सी. के प्रशिक्षणार्थियों की कुल संख्या 600 है, जिनमें 300 बी. एड. प्रशिक्षणार्थियों व 300 बी. एस. टी. सी. प्रशिक्षणार्थियों को लिया गया है। प्रदत्त संकलन के लिए स्वनिर्मित प्रश्नावली व प्रोफेशनल कमीन्टमेंट स्केल फॉर टीचर एजुकेटर्स विशाल सूद के द्वारा निर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया गया। शोध अध्ययन में सर्वेक्षण विधि प्रयोग में लिया गया। बी. एड. एवं बी. एस. टी. सी. प्रशिक्षणार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि व शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति में तुलनात्मक अंतर नहीं पाया गया। आर्य डॉ. मोहन (2022) ने अपने अध्ययन – बी. एड. एवं बी. टी. सी. प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण अभ्यास के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन में जनसंख्या के रूप में विद्यालयों से 200 छात्रध्यापकों व छात्राध्यापिकाओं को लिया जिनमें न्यादर्श के रूप में 50 छात्रध्यापक, 50 छात्राध्यापिकाओं को चुना गया। आँकड़ों के संकलन के लिए शोधकर्त्ता ने स्वनिर्मित अभिवृत्ति मापनी का निर्माण किया गया। शोध अध्ययन में सर्वेक्षण विधि को प्रयोग में लिया गया। शोध अध्ययन में बी. टी. सी., बी. एड. की छात्राध्यापिकाओं की अभ्यास शिक्षण के प्रति अभिवृत्तियों में सार्थक अंतर नहीं पाया गया। झा, रौशन कुमार, (2022) के अध्ययन बी. एड. कक्षा के प्रशिक्षणार्थियों की शैक्षिक अभियोग्यता एवं शैक्षिक अभिवृत्ति का अध्ययन प्रस्तुत शोध कार्य में दरभंगा शहर के बी. एड. विद्यार्थियों को लिया गया है। प्रस्तुत शोध में बी. एड. प्रशिक्षणार्थियों की शैक्षिक अभियोग्यता एवं शैक्षिक अभिवृत्ति का सांख्यिकीय विश्लेषण किया गया। प्रस्तुत शोध में बी. एड. प्रशिक्षणार्थियों की शैक्षिक अभियोग्यता एवं शैक्षिक अभिवृत्ति का बी. एड. प्रशिक्षण संस्थान के पुरुष एवं महिला प्रशिक्षणार्थियों की शैक्षिक अभियोग्यता एवं शैक्षिक अभिवृत्ति का मापन किया गया है तथा दोनों के मध्य धनात्मक सहसंबंध

पाया गया। बी. एड. प्रशिक्षण संस्थान के प्रशिक्षणार्थियों की शैक्षिक अभियोग्यता में सार्थक अंतर नहीं पाया गया। अर्थात शासकीय एवं अशासकीय बी. एड. प्रशिक्षण संस्थान के प्रशिक्षणार्थी दोनों समान शैक्षिक योग्यता रखते हैं। रानी, देविका (2023) ने अपने अध्ययन कर्नाटक में 'बहुभाषी शिक्षा मॉडल भारत यूरोपियन सीएलआईएल प्रयोग से सीख रहा है' में जनसंख्या के रूप में एल 1 कन्नड और एल 2 अंग्रेजी के विकास में अंग्रेजी–कन्नड माध्यम और द्विभाषी माध्यम के तीन मॉडलों की प्रभावशीलता का पता लगाने के लिए मानक विचलन का प्रयोग किया गया। इस अध्ययन के लिए उपयोग की जाने वाली नमूना पद्धति क्रॉस सेक्शनल गैर–संभावित सुविधा नमूनाकरण प्रयोग में लायी गई। विश्लेषण और सर्वेक्षण के माध्यम से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि कर्नाटक के स्कूलों में भाषा शिक्षा अस्पष्टता और संघर्षों से घिरी हुई है।

षोध उद्देष्य

बी. एड. प्रषिक्षणार्थियों का बहुभाषी षिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन, लिंग, स्थानीयता और विषय वर्ग के आधार पर बी. एड. प्रषिक्षणार्थियों का बहुभाषी षिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन।

षोध परिकल्पना

1ण लिंग के आधार पर बी. एड. प्रषिक्षणार्थियों का बहुभाषी षिक्षा के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2ण स्थानीयता के आधार पर का बहुभाषी षिक्षा के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
3ण विषय वर्ग के आधार पर का बहुभाषी षिक्षा के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

षोध विधि

प्रस्तुत अध्ययन में वर्णात्मक षोध के अंतर्गत सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। जिसमें पौड़ी जिले के हे. न. ब. गढ़वाल विष्वविद्यालय, श्रीनगर (गढ़वाल) में अध्ययनरत द्विवर्षीय बी. एड. प्रषिक्षणार्थियों को जनसंख्या के रूप में लिया गया है। षोधार्थिनी द्वारा 160 द्विवर्षीय बी. एड. प्रषिक्षणार्थियों का चयन यादृच्छिक न्यादर्ष चयन विधि के द्वारा किया गया है, जिसमें 54 (34%) पुरुष प्रषिक्षणार्थी एवं 106 (66%) महिला प्रषिक्षणार्थियों को अध्ययन में षामिल किया गया। षहरी क्षेत्र में निवास करने वाले 88 प्रषिक्षणार्थी सम्पूर्ण प्रतिदर्ष का 55% प्रतिनिधित्व करते हैं जबकि ग्रामीण क्षेत्र में निवास करने वाले 72 प्रषिक्षणार्थी सम्पूर्ण प्रतिदर्ष का 45% प्रतिनिधित्व करते हैं। विषय वर्ग के आधार पर 95 (59%) प्रषिक्षणार्थी कला वर्ग का प्रतिनिधित्व करते हैं जबकि 65 (41%) प्रषिक्षणार्थी विज्ञान वर्ग का प्रतिनिधित्व करते हैं। प्रस्तुत षोध अध्ययन में षोधार्थिनी द्वारा प्रदत्तों के संग्रहण हेतु स्व–निर्मित बहुभाषी षिक्षा अभिवृत्ति मापनी का निर्माण किया गया। षोध अध्ययन में उद्देष्यों एवं परिकल्पनाओं के आधार पर उपयुक्त वर्णात्मक एवं अनुमानित सांख्यिकी का प्रयोग किया गया, जिसके अन्तर्गत माध्य, मानक विचलन एवं टी–परीक्षण का प्रयोग किया गया।

प्रदत्तों का विश्लेषण

वर्णात्मक सांख्यिकी

सारणी संख्या 1ः लिंग, स्थानीयता और विषय वर्ग के आधार पर बी. एड. प्रषिक्षणार्थियों का विभाजन

लिंग	आवृत्ति	प्रतिषत	स्थानीयता	आवृत्ति	प्रतिषत	विषय वर्ग	आवृत्ति	प्रतिषत
पुरुष	54	34%	षहरी	88	55%	कला वर्ग	95	59%
महिला	106	66%	ग्रामीण	72	45%	विज्ञान वर्ग	65	41%
योग	160	100%	योग	160	100%	योग	160	100%

आरेख संख्या 1ः लिंग, स्थानीयता और विषय वर्ग के आधार पर बी. एड. प्रषिक्षणार्थियों का निरूपण

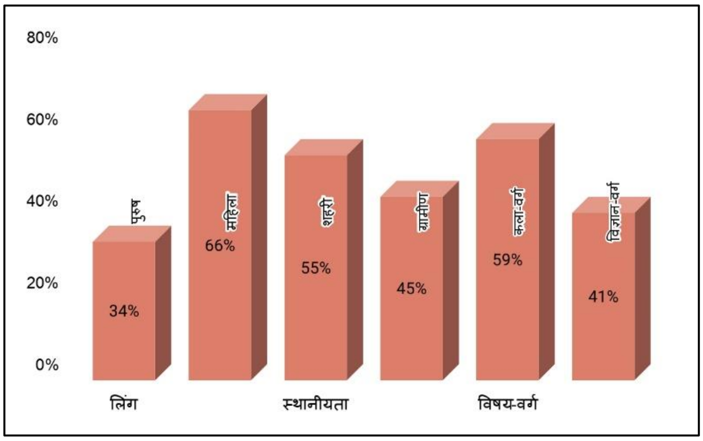

सारणी 1 में लिंग, स्थानीयता और विषय वर्ग के आधार पर बी. एड. प्रषिक्षणार्थियों के विभाजन को दर्षाया गया है। कुल प्रषिक्षणार्थियों में से 54 (34%) प्रषिक्षणार्थी पुरुष पाए गए, वहीं 106 (66%) प्रषिक्षणार्थी महिला पाए गए। षहरी क्षेत्र में निवास करने वाले 88 प्रषिक्षणार्थी सम्पूर्ण प्रतिदर्ष का 55% प्रतिनिधित्व करते हैं जबकि ग्रामीण क्षेत्र में निवास करने वाले 72 प्रषिक्षणार्थी सम्पूर्ण प्रतिदर्ष का 45% प्रतिनिधित्व करते हैं। 95 (59%) प्रषिक्षणार्थी कला वर्ग का प्रतिनिधित्व करते हैं जबकि 65 (41%) प्रषिक्षणार्थी विज्ञान वर्ग का प्रतिनिधित्व करते हैं।

आनुमानिक सांख्यिकी

षून्य परिकल्पना – लिंग, स्थानीयता और विषय वर्ग के आधार पर बी. एड. प्रषिक्षणार्थियों का बहुभाषी षिक्षा के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

सारणी संख्या 2: लिंग, स्थानीयता और विषय वर्ग के आधार पर बी. एड. प्रषिक्षणार्थियों का बहुभाषी षिक्षा के प्रति अभिवृत्ति

		संख्या	**माध्य**	**मानक विचलन**	**स्वतंत्रता कोटि**	**टी–मान**	**पी–मान**
बहुभाषी षिक्षा के प्रति अभिवृत्ति	पुरुष	54	36.83	8.73	158	0.951*	0.342
	महिला	106	38.10	7.57			
	षहरी	88	37.17	7.81	158	0.883*	0.378
	ग्रामीण	72	38.29	8.19			
	कला वर्ग	95	37.08	8.44	158	1.132*	0.259
	विज्ञान वर्ग	65	38.53	7.23			

*–सार्थक अन्तर नहीं

आरेख संख्या 2: लिंग, स्थानीयता और विषय वर्ग के आधार पर बहुभाषी षिक्षा के प्रति अभिवृत्ति माध्य व मानक विचलन का निरूपण

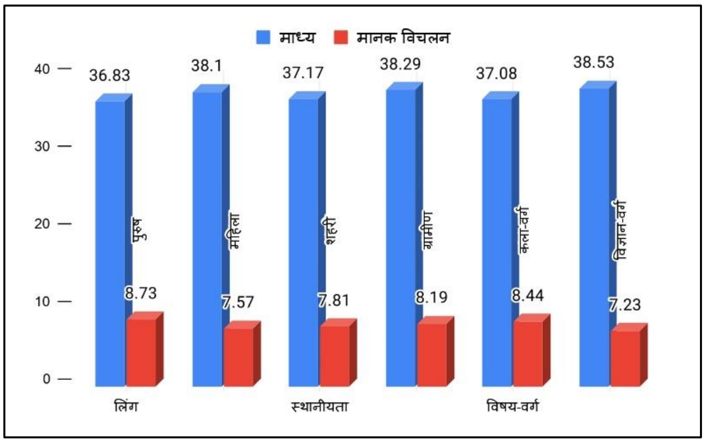

सारणी 2 यह दर्षाता है कि 54 पुरुष प्रषिक्षणार्थियों का माध्य 36.83 तथा मानक विचलन 8.73 प्राप्त हुआ है वहीं 106 महिला प्रषिक्षणार्थियों का माध्य 38.10 तथा मानक विचलन 7.57 प्राप्त हुआ है। प्रषिक्षणार्थियों के लिंग व बहुभाषी षिक्षा के प्रति उनकी अभिवृत्ति में सांख्यिकीय रूप से सार्थक अन्तर नहीं है, जहाँ टी–मान (158) = 0.951, पी–मान = 0.342 पाया गया, जो कि सार्थकता स्तर 0.05 से अधिक है। षहर में निवास करने वाले 88 प्रषिक्षणार्थियों का माध्य 36.83 तथा मानक विचलन 8.73 प्राप्त हुआ है वहीं ग्रामीण क्षेत्र में निवास करने वाले 72 प्रषिक्षणार्थियों का माध्य 38.10 तथा मानक विचलन 7.57 प्राप्त हुआ है। प्रषिक्षणार्थियों की स्थानीयता व बहुभाषी षिक्षा के प्रति उनकी अभिवृत्ति में सांख्यिकीय रूप से सार्थक अन्तर नहीं है, जहाँ टी–मान (158) = 0.883, पी–मान = 0.378 प्राप्त हुआ है, जो कि सार्थकता स्तर 0.05 से अधिक है। कला वर्ग के 95 प्रषिक्षणार्थियों का माध्य 37.08 तथा मानक विचलन 8.44 प्राप्त हुआ है वहीं विज्ञान वर्ग के 65 प्रषिक्षणार्थियों का माध्य 38.53 तथा मानक विचलन 7.23 प्राप्त हुआ है। विषय–वर्ग के आधार पर प्रषिक्षणार्थियों की वर्गीयता व बहुभाषी षिक्षा के प्रति उनकी अभिवृत्ति में सांख्यिकीय रूप से सार्थक अन्तर नहीं है, जहाँ टी–मान (158) = 1.132 व पी–मान = 0. 259 प्राप्त हुआ है, जो कि सार्थकता स्तर 0.05 से अधिक है। इस आधार पर 'लिंग, स्थानीयता और विषय वर्ग के आधार पर बी. एड. प्रषिक्षणार्थियों का बहुभाषी षिक्षा के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है' स्वीकृत की जाती है।

परिचर्चा एवं निष्कर्ष

षिक्षा सम्बन्धी नीतियाँ, समावेषी पाठ्यक्रम प्रारूप, सामाजिक–सांस्कृतिक दबाव, समता व षिक्षा में समानता के अवसर, वैष्वीकरण आदि ऐसे कारक हैं जो बहुभाषी षिक्षा के प्रति दृष्टिकोण में लिंग के आधार पर अन्तर को कम करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। बहुभाषी षिक्षा के प्रति दृष्टिकोण में वैष्वीकरण ने गहरे रूप से प्रभावित किया है, यह केवल ग्रामीण और षहरी क्षेत्रों तक ही सीमित नहीं है, जिससे विद्यार्थियों में समान दृष्टिकोण विकसित हो रहे हैं। प्रौद्योगिकी और षैक्षिक नीतियों के प्रभावी क्रियान्वयन में हुई प्रगति ने बहुभाषी षिक्षा के लिए संसाधनों को सुलभ बना दिया है, जिससे विभिन्न सामाजिक पृष्ठभूमि के विद्यार्थी बहुभाषी षिक्षा से जुड़ सकें। इसके अतिरिक्त, विभिन्न क्षेत्रों में मानकीकृत पाठ्यक्रम भाषा सीखने के प्रति एक समान दृष्टिकोण विकसित करने में सहायक हैं, जिससे एक साझा दृष्टिकोण को बल मिलता है। संज्ञानात्मक कौषलों में वृद्धि, प्रभावी सम्प्रेषण व भाषा कौषल सभी विषय–वर्ग के विद्यार्थियों के लिए आवष्यक है। वैष्वीकरण सभी विद्यार्थियों को, चाहे किसी भी विषय–वर्ग के हों, भावी अवसरों के लिए भाषा कौषल के महत्व को पहचानने के लिए प्रेरित करता है। बहुभाषी षिक्षा में सामाजिक व सांस्कृतिक पृष्ठभूमि एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, क्योंकि भाषा और सामाजिक–सांस्कृतिक पहचान के साथ व्यक्तिगत अनुभव बहुभाषिता के प्रति मूल्य को प्रभावित करती है। षैक्षिक वातावरण भी बहुभाषिता के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण को बढ़ावा देने में मदद करता है। इसके अतिरिक्त, सरकारी भाषा सम्बन्धी नीतियाँ और विद्यालयी वातावरण में सहायक बहुभाषी प्रथाओं की उपस्थिति उनके दृष्टिकोण को प्रभावित करती है। समकक्षों का प्रभाव भी एक महत्वपूर्ण कारक है। इसके अतिरिक्त, बहुभाषी षिक्षा की प्रभावषीलता के प्रति धारणाएँ, जिसमें भाषा अधिग्रहण के बारे में उनके दृष्टिकोण में योगदान करती है। विभिन्न भाषाओं के प्रति सामाजिक दृष्टिकोण भी प्रषिक्षणार्थियों के बहुभाषी षिक्षा के प्रति दृष्टिकोण को प्रभावित करता है। इन कारकों को संबोधित करके, षैक्षिक प्रणाली में प्रषिक्षणार्थियों में बहुभाषी षिक्षा के प्रति अधिक सकारात्मक दृष्टिकोण को बढ़ावा दिया जा सकता है। षोध अध्ययन के परिणामों के आधार पर निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि हेमवती नन्दन बहुगुणा गढ़वाल विष्वविद्यालय, श्रीनगर गढ़वाल में अध्ययनरत बी. एड. प्रषिक्षणार्थियों की बहुभाषी षिक्षा के प्रति अभिवृत्ति में लिंग, स्थानीयता और विषय वर्ग के आधार पर कोई सार्थक अन्तर नहीं है। महिला बी. एड. प्रषिक्षणार्थियों का माध्य मान 38.10 पाया गया जबकि पुरुष बी. एड. प्रषिक्षणार्थियों का माध्य मान 36.83 पाया गया। यह दर्षाता है कि महिला बी. एड. प्रषिक्षणार्थियों की बहुभाषी षिक्षा के प्रति अभिवृत्ति पुरुष बी. एड. प्रषिक्षणार्थियों की अपेक्षा सकारात्मक है। ग्रामीण परिवेष में निवास करने वाले बी. एड. प्रषिक्षणार्थियों का माध्य मान 38.10 पाया गया जबकि षहरी परिवेष में निवास करने वाले बी. एड. प्रषिक्षणार्थियों का माध्य मान 36.83 पाया गया, जो कि ग्रामीण क्षेत्र में निवास करने वाले बी. एड. प्रषिक्षणार्थियों का षहरी क्षेत्र में निवास करने वाले बी. एड. प्रषिक्षणार्थियों की अपेक्षा अभिवृत्ति सकारात्मक है। विज्ञान–वर्ग के बी. एड. प्रषिक्षणार्थियों का माध्य मान 38.53 पाया गया वहीं कला–वर्ग के बी. एड. प्रषिक्षणार्थियों का माध्य मान 37.08 पाया गया, जो कि यह दर्षाता है कि विज्ञान–वर्ग के बी. एड. प्रषिक्षणार्थियों का कला–वर्ग के बी. एड. प्रषिक्षणार्थियों की अपेक्षा अभिवृत्ति सकारात्मक है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1ण आर्य, मोहन (2012). बी. एड. एवं बी. टी. सी. प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण अभ्यास के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन, ऑथर–वॉल्यूम–12 इष्यू–01 नं– 2 आईएसएसएनः –2278–4632.

2ण गेरेट, हेनरी (2009). शिक्षा और मनोविज्ञान में सांख्यिकी के प्रयोग. राजेन्द्र नगर दुधियाना कल्याणी पब्लिशर्स.

3ण ग्रेसिया, ओ., एण्ड क्लेन, टी. (2013). शिक्षक शिक्षा के लिए बहुभाषी शिक्षा, द इंसाइक्लोपीडिया ऑफ एप्लाइड लिंग्विस्टिक, 5543–5548.

4ण देवी, मेनका (2020). बी. एड. एवं बी. एस. टी. सी. प्रशिक्षणार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि और अध्यापन के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन. इंडियन जर्नल ऑफ रिसर्च– डी. ओ. आई. 10:36106/चंतपचमग अंक–9 इष्यू–2 आईएसएसएन नं.

2250–1991.
5ण पचौरी, गिरीश (2017). बाल्यावस्था एवं विकास, मेरठ आर लाल बुक डिपो.
6ण पटनायक, बिनय. (2021). बहुभाषी सन्दर्भ में सीखना. अजीम प्रेमजी यूनिवर्सिटी लर्निंग कर्व, (2), 36–39.
7ण बिन ताहिर, एस. जेड. (2015). पेसान्ट्रेन में बहुभाषी शिक्षा के प्रति संत्रि और उस्ताद की अभिवृत्ति. इंटरनेश्नल जर्नल ऑफ लैंग्वेज एण्ड लिंग्विस्टिक, 3(4), 210–216.
8ण बिसाई, एस., और सिंह, एस. (2022). लैंग्वेज विजिबिलिटी इन मल्टीलिंग्वल स्कूल्सः एन इम्पीरिकल स्टडी ऑफ स्कूल्स फ्रॉम इंडिया. लिंग्विस्टिक एण्ड एजुकेशन, 69, 101046.
9ण राव, ए. गिरिधर, मेनन, शैलजा. (2019). राष्ट्रीय शिक्षा नीति (डी. एन. ई. पी.) 2016 के प्रारूप में भाषा और साक्षरता. अजीम प्रेमजी यूनिवर्सिटी लर्निंग कर्व, (15), 58–62.
10ण लेफेब्वेरे, ई. ई. (2012). बहुभाषी शिक्षा के प्रति छात्रों की अभिवृत्ति (मास्टर्स थीसिस, यूनिवर्सिटी ऑफ ऑरेगन).
11ण सक्सेना मालती (2017). बी. एड. और डी. एल. एड. विद्यार्थियों का शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन. करेसपांडिंग ऑथर, वॉल्यूम और – 4/1– आईएसएसएन–ओएलडी–3231–3613.
12ण सुजा, पराशोधा (2019). बी. एड. और डी. एल. एड. विद्यार्थियों का शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन, जर्नल ऑफ इमर्जिंग टेक्नोलॉजिज एण्ड इनोवेटिव रिसर्च – अंक –16, इष्यू–4, आईएसएसएन– 2349–5162.
13ण सोनू, सारण. (2024). बहुभाषी शिक्षा की अनिवार्यता और मातृभाषा आधारित शिक्षा. मानविकी एवं विकास, 19(02), 8–12.
14ण शर्मा, आर. ए. (2010). शिक्षा अनुसंधान के मूल तत्व एवं शोध प्रक्रिया, मेरठ, आर लाल बुक डिपो.
15ण ीजजचेरूध्ध्कवपण्वतहध्10ण्5422ध्रउमतण्2022.2023ण्अ12
16ण ीजजचेरूध्ध्तमेमंतबीण्सपइतंतलण्वितकींउण्मकनध्रउमतध्अवस12ध्पे1ध्12
17ण ीजजचेरूध्ध्तमेमंतबीण्सपइतंतलण्वितकींउण्मकनध्रउमतध्अवस12ध्पे1ध्12ध्
18ण ीजजचेरूध्ध्तमेमंतबीण्सपइतंतलण्वितकींउण्मकनध्बहपध्अपमूबवदजमदजण्बहपध्तजपबसमत्र1201–बवदजमगजत्ररउमत
19ण ीजजचेरूध्ध्ंदनअंकेंउचंकंग्रंपउचतमउरपनदपअमतेपजलण्मकनण्पदध्332ध्1ध्डनसजप.
सपदहनंस:20म्कनबंजपवद:20वित:20ज्तपइंस:20बैपसकतमदण्चकि
20ण ीजजचरूध्ध्रनदपीलंजरवनतदंसण्पदध्दवत्र9त्ररनसलत्र20ध्14ण्चकि
21ण ीजजचेरूध्ध्दबमतजण्दपबण्पदध्चकधि्त्रविबनेत्रहतवनचध्ठींतजपलं:20ठींवद:20ङ्गं:20ैपींदण्चकि
22ण ीजजचेरूध्ध्दबमतजण्दपबण्पदध्चकधि्त्रविबनेत्रहतवनचध्ठींतजपलं:20ठींवद:20ङ्गं:20ैपींदण्चकि
23ण ीजजचेरूध्धीपण्उण्पापचमकपंण्वतह झ ूपाप
24ण ीजजचेरूध्ध्ूेबवजइत्रण्वतहण्ंईीपनजईीप